अंक -33 माह-दिसम्बर

उड़ान

भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर

एच-107,सैक्टर-12, नॉएडा

ई-पत्रिका विमोचन

आज दिनाँआ 7 दिसम्बर को विद्यालय की ई-पत्रिका का विमोचन हुआ | इस पत्रिका में गत माह में विद्यालय में हुई समस्त गतिविधियों की जानकारी दी हुई होती है | विद्यालय की ई-पत्रिका का विमोचन मीनाक्षी जी (पी०जी०टी०) जीव विज्ञान /अकादमिक समन्वयक महामाया बालिका इण्टर कॉलेज, सैक्टर 44 के द्वारा किया गया | इस अवसर पर प्रधानाचार्य जी, कृष्णपाल जी, कपिल जी, कुलदीप जी, अक्षय जी एवं श्रीमती रजनी जी उपस्थित थी | आप सभी ने मिलकर ई-पत्रिका का विमोचन किया |

वीरता को श्रद्धांजलि

जनरल **बिपिन रावत** PVSM, UYSM, AVSM, YSM, SM, VSM, ADC (16 मार्च 1958 - 8 दिसंबर 2021) भारत के पहले रक्षा प्रमुख या चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) थे; उन्होंने ने 1 जनवरी 2020 को रक्षा प्रमुख के पद का भार ग्रहण किया। इससे पूर्व वो भारतीय थल सेनाध्यक्ष के पद पर 31 दिसंबर 2016 से 31 दिसंबर 2019 तक पर रह चुके थे। 8 दिसम्बर 2021 को, एक हैलिकॉप्टर दुर्घटना में, 63 वर्ष की आयु में जनरल रावत का निधन हो गया।

जनरल रावत का जन्म 16 मार्च 1958 को उत्तर प्रदेश के गढ़वाल जिले के पौड़ी (वर्तमान में पौड़ी गढवाल जिला, उत्तराखण्ड) में हुआ।[8] इनके पिता लक्ष्मण सिंह रावत भारतीय सेना में उच्च पदस्थ अफ़सर थे जो लेफ्टिनेंट जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए।

जनरल रावत की शुरूआती शिक्षा देहरादून के कैंबरीन हॉल स्कूल और शिमला के सेंट एडवर्ड स्कूल में हुई। तत्पश्चात, इन्होने भारतीय सैन्य अकादमी (आइएमए), देहरादून में दाखिला प्राप्त किया और स्नातक की शिक्षा ली; यहाँ उन्हें *सोर्ड ऑफ़ ऑनर* दिया गया।[5]

जनरल रावत ने फोर्ट लीवनवर्थ, यूएसए में डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज, वेलिंगटन और हायर कमांड कोर्स के स्नातक भी हैं। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से रक्षा एवं प्रबन्ध अध्ययन में एम फिल की डिग्री हासिल की; मद्रास विश्वविद्यालय से स्ट्रैटेजिक और डिफेंस स्टडीज में एमफिल; प्रबंधन में डिप्लोमा और कम्प्यूटर स्टडीज में भी डिप्लोमा प्राप्त किया। 2011 में, उन्हें सैन्य-मीडिया सामरिक अध्ययनों पर अनुसंधान के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा डॉक्टरेट ऑफ़ फिलॉसफी से सम्मानित किया गया। वर्ष 2011 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से इन्हें सैन्य मीडिया अध्ययन में पीएचडी की उपाधि दी गयी।

विद्यालय में उनके आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया | सभी भैया/बहनों एवं आचार्य/ आचार्याओं ने 2 मिनट का मौन रखकर इस वीर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की |

मौन की स्थिति में विद्यालय के भैया/बहन एवं आचर्य/ आचार्याएं

प्रचार विभाग की क्षेत्रीय बैठक

आगामी वर्ष की योजना हेतु प्रचार -विभाग की क्षेत्रीय स्तर की बैठक का आयोजन किया गया |

रामानुजन जयंती एवं गणित सप्ताह

श्रीनिवास रामानुजन् इयंगर (तमिल ஸ்ரீனிவாஸ ராமானுஜன் ஐயங்கார்) (22 दिसम्बर 1887 – 26 अप्रैल 1920) एक महान भारतीय गणितज्ञ थे। इन्हें आधुनिक काल के महानतम् गणित विचारकों में गिना जाता है। इन्हें गणित में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिला, फिर भी इन्होंने विश्लेषण एवं संख्या सिद्धांत के क्षेत्रों में गहन योगदान दिए। इन्होंने अपने प्रतिभा और लगन से न केवल गणित के क्षेत्र में अद्भुत अविष्कार किए वरन भारत को अतुलनीय गौरव भी प्रदान किया।

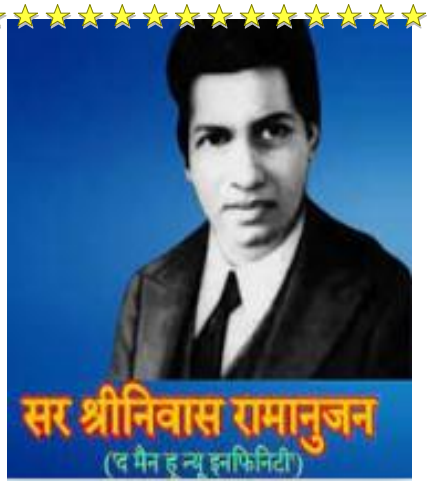

ये बचपन से ही विलक्षण प्रतिभावान थे। इन्होंने खुद से गणित सीखा और अपने जीवनभर में गणित के 3,884 प्रमेयों का संकलन किया। इनमें से अधिकांश प्रमेय सही सिद्ध किये जा चुके हैं। इन्होंने गणित के सहज ज्ञान और बीजगणित प्रकलन की अद्वितीय प्रतिभा के बल पर बहुत से मौलिक और अपारम्परिक परिणाम निकाले जिनसे प्रेरित शोध आज तक हो रहा है, यद्यपि इनकी कुछ खोजों को गणित मुख्यधारा में अब तक नहीं अपनाया गया है। हाल में इनके सूत्रों को क्रिस्टल-विज्ञान में प्रयुक्त किया गया है। इनके कार्य से प्रभावित गणित के क्षेत्रों में हो रहे काम के लिये *रामानुजन जर्नल* की स्थापना की गई है।इस अवसर पर विद्यालय में राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया गया |भैया बहनों ने गणित से सम्बन्धित कुछ एक्टिविटी प्रस्तुत की |

2
9
3
4

5
2
4

1
3
2
6

5
2
3
4

9
0
3
4

8
3
4
5

6
3
4
5

9

7
3
4
5

सी॰बी॰एस॰ई॰ की परीक्षाएँ सम्पन्न हुई

दिसंबर के माह में 20 दिसंबर तक विद्यालय में बोर्ड की परीक्षाएँ हो रही थी जिसमें बोर्ड की तरफ से कोओर्डिनेटर श्रीमती मीनाक्षी जी (पी॰जी॰टी॰ जीव-विज्ञान, महामाया बालिका इंटर कॉलिज) ने अपने कुशल मार्गदर्शन में इन परीक्षाओं को सकुशल सम्पन्न करवाने में अहम भूमिका निभाई | विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान पंकज शर्मा जी एवं श्रीमती नीतू जी ने उन्हें मिष्ठान भेंट की |

तुलसी पूजन दिवस

धर्म में तुलसी पूजन की परंपरा पौराणिक काल से चली आ रही है. लेकिन पिछले कुछ वर्षों से भारत में आज यानी 25 दिसंबर को तुलसी पूजन दिवस मनाई जाती है. इस प्रथा की शुरुआत साल 2014 से हुई और इस दौरान देश के कई केंद्रीय मंत्रियों और संतों ने तुलसी पूजा के महत्व का बखान सोशल मीडिया के द्वारा किया. तभी से 25 दिसंबर 2021 को तुलसी पूजन दिवस मनाया जाने लगा.

तुलसी पूजन से बुरे विचारों का होता है नाश

- ऐसी मान्यता है कि तुलसी के पौधे के पास किसी भी मंत्र-स्तोत्र आदि का पाठ करने से उसका अनंत गुना अधिक फल मिलता है.
- भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, दैत्य आदि सब तुलसी के पौधे से दूर भागते हैं.
- तुलसी पूजन से बुरे विचारों का नाश होता है.
- पद्मपुराण के अनुसार तुलसी पत्ते से टपकता हुआ जल यदि मनुष्य अपने सिर पर लगता है तो इतना करने भर से उस मनुष्य को गंगास्नान और 10 गोदान का फल मिल जाता है.
- तुलसी पूजन से रोग नष्ट हो जाते हैं और अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त होता है.
- तुलसी पूजन, तुलसी रोपण व तुलसी धारण से पाप नष्ट होते हैं.
- तुलसी पूजन स्वर्ग और मोक्ष के द्वार खोलता है.
- श्राद्ध और यज्ञ आदि कार्यों में तुलसी का एक पत्ता भी महान पुण्य देनेवाला होता है.
- तुलसी के नाम उच्चारण मात्र से ही पुण्य की प्राप्ति होती है. मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं.

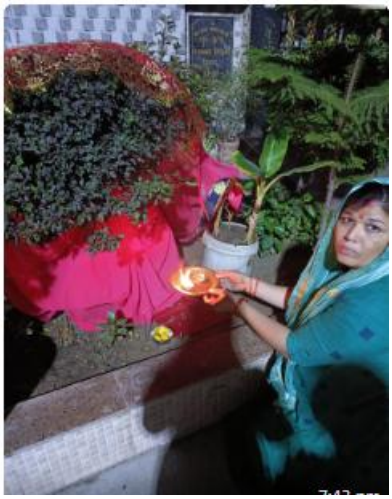

मदन मोहन मालवीय जयंती

महामना मदन मोहन मालवीय (25 दिसम्बर 1861 - 12 नवंबर 1946) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही इस युग के आदर्श पुरुष भी थे। वे भारत के पहले और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें **महामना** की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया। पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृ भाषा तथा भारतमाता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिये तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर सकें। मालवीयजी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्मत्याग में अद्वितीय थे। इन समस्त आचरणों पर वे केवल उपदेश ही नहीं दिया करते थे अपितु स्वयं उनका पालन भी किया करते थे। वे अपने व्यवहार में सदैव मृदुभाषी रहे।

कर्म ही उनका जीवन था। अनेक संस्थाओं के जनक एवं सफल संचालक के रूप में उनकी अपनी विधि व्यवस्था का सुचारु सम्पादन करते हुए उन्होंने कभी भी रोष अथवा कड़ी भाषा का प्रयोग नहीं किया। भारत सरकार ने २४ दिसम्बर २०१४ को उन्हें भारत रत्न से अलंकृत किया।

गीता जयंती

14 दिसम्बर को गीता जयंती पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिंदू धर्म में इस दिन का विशेष महत्व होता है, गीता में समस्त जीवन का सार है। हिंदू पंचांग के अनुसार अगहन (मार्गशीर्ष) माह के शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एकादशी की तिथि पर गीता जयंती का त्योहार मनाया जाता है। मोक्षदा एकादशी तिथि पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को धर्म और कर्म को समझाते हुए उपदेश दिया था। महाभारत के युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा जो उपदेश दिया था उसे गीता कहा जाता है। गीता के उपदेश में जीवन जीने, धर्म का अनुसरण करने और कर्म के महत्व को समझाया गया है।

गीता जयंती के दिन गीता के उपदेशों को पढ़ना, सुनना और बताए गए मार्ग पर चलना बहुत ही शुभ माना जाता है। गीता के कुल 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं। गीता ही ऐसा ग्रंथ है जिसका प्रतिवर्ष जयंती मनाई जाती है। गीता को श्रीमदभगवत गीता और गीतोपनिषद के नाम से जाना जाता है। गीता के उपदेशों को आत्मसात और अनुसरण करने पर समस्त कठिनाईयों और शंकाओं का निवारण होता है। गीता के अध्ययन से जीवन में सफलता प्राप्ति की जा सकती है। गीता के उपदेशों पर चलने से व्यक्ति को कठिन से कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। गीता के उपदेश में जीवन को जीने की कला, प्रबंधन और कर्म सब कुछ है।